MSK-**032**

भारतीय दर्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

P.G. Diploma in Bharatiya Darshan

(PGDBD)

सत्रीय-कार्य

(जनवरी, 2026 एवं जुलाई, 2026 सत्रों के लिये)

MSK-**032** न्याय, वैशेषिक एवं चार्वाक दर्शन: स्वरूप एवं परिचय

मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

न्याय, वैशेषिक एवं चार्वाक दर्शन: स्वरूप एवं परिचय : MSK-**032**

सत्रीय-कार्य **(2026)**

पाठ्यक्रम कोड : MSK-032/2026

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिये 100 अंक निर्धारित किये गये हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य **:** शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश **:** सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये:

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिये।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है:

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता :...................

दिनाँक :.......................

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :................

सत्रीय कार्य कोड :.......................

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :...................

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन **:** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास **:** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणी परक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

सत्रीयकार्य : MSK-**032**

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ **:**

जनवरी**, 2026** सत्र के लिए **: 31** अक्टूबर**, 2026**

जुलाई**, 2026** सत्र के लिए **: 31** मार्च**, 2027**

पाठ्यक्रम कोड: MSK - 032

पाठ्यक्रम शीर्षक : न्याय, वैशेषिक एवं चार्वाक दर्शन: स्वरूप एवं परिचय

सत्रीय कार्य - MSK-032/TMA/2026

पूर्णांक - 100

निम्नलिखित में से किन्हीं **5** प्रश्नों का उत्तर लिखिए। **20*5=100**

1. न्याय-वैशेषिक दर्शन में आत्मा को 'ज्ञान का आधार' क्यों माना गया है, 'ज्ञान-स्वरूप' क्यों नहीं? जीवात्मा और परमात्मा के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

2. हानादि बुद्धि क्या है और प्रत्यक्ष ज्ञान की प्रक्रिया में इसका महत्त्व 'सर्प' और 'स्वर्ण' के उदाहरणों के माध्यम से समझाएँ।

3. संयुक्त समवेत समवाय सन्निकर्ष को चित्र सहित समझाएँ।

4. लिङ्ग (हेतु) के तीन ज्ञान चरणों को उदाहरण सहित स्पष्ट करते हुए सिद्ध कीजिए कि लिङ्गपरामर्श (लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम्) ही अनुमिति का अन्तिम और अनिवार्य करण क्यों कहलाता है।

5. साधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास और असाधारण अनैकान्तिक हेत्वाभास में क्या मौलिक अंतर है?

6. वैशेषिक दर्शन के मत का विस्तृत वर्णन कीजिए कि वे उपमान को पृथक् प्रमाण क्यों नहीं मानते?

7. न्याय-वैशेषिक दर्शन में अप्रामाण्य (अयथार्थता) का ग्रहण किस प्रकार होता है? उदाहरण सहित समझाइए ।

8. न्याय-वैशेषिक दर्शन में साधारण निमित्त कारण किन्हें माना गया है?